'kks/k&izk:i

# ukxiqjh lkfgR;dkj lfork ds'kjh dk thou vkSj lkfgR; % ,d v/;;u

ih,p0Mh0 mikf/k gsrq izLrkfor 'kks/k izk:i

LukrdksRrj ukxiqjh Hkk"kk foHkkx

jk¡ph fo'ofo|ky;] jk¡phA

o"kZ %& 2023

ladk; tutkrh; ,oa {ks=h; Hkk"kk

jk¡ph fo'ofo|ky;] jk¡ph

'kks/k funsZ'kd %

Mk0 ¼izks0½ f=os.kh ukFk lkgq
dqyifr
>kj[k.M jkT; [kqyk fo'ofo|ky;]
jk¡ph] >kj[k.MA

'kks/kdRrkZ %

lhek dqekjh
,e0,0 ukxiqjh
;w0th0lh0 usV@ts0vkj0,Q0
tutkrh; ,oa {ks=h; Hkk"kk ladk;]
jk¡ph fo'ofo|ky;] jk¡ph

## Hkfedk %

झारखण्ड शब्द की उत्पत्ति दो शब्दों से मिलकर हुई है– झाड़ (वन) एवं खण्ड (प्रदेश) यानि झारखण्ड का शाब्दिक अर्थ है– वन प्रदेश। ये राज्य अपने नाम के अनुरूप ही जंगल झाड़ से भरा हुआ है। इस प्रदेश मे यह लोकोक्ति बहुत ही प्रचलित है– यहाँ के लोगों का चलना ही नृत्य है और बोलना ही गीत है। ये पंक्ति यहाँ की साहित्य का प्रतिनिधित्व करती है। झारखण्ड राज्य में विभिन्न भाषाओं संस्कृतियों एवं धर्मों का समावेश है। यह आदिवासी एवं सदान बहुल क्षेत्र है। यहाँ जनजातीय एवं गैर जनजातीय भाषाओं का अनोखा संयोग मिलता है, जिसमें जजातीय भाषाओं में कुँड़ुख, मुण्डारी, हो, संथाली एवं खड़िया भाषाएँ है, इसी प्रकार गैर जनजातीय भाषााओं में नागपुरी, खोरठा, कुड़माली एवं पंचपरगनिया भाषा आती है। यहाँ की संस्कृति में आदि जीवन रंग–गंध सभी पर्व त्योहार गीत, नृत्य एवं गायन वादन में सहाहित है।

नागपुरी साहित्य झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़ और उड़िसा राज्यों में बोली जाने वाली एक आर्य भाषा है। नागजाति या नागवंश के शासन के समय राज्यभाषा थी। नागपुरी सदानों की मातृभाषा है। नागपुरी को सादान के अतिरिक्त मुण्डा, खड़िया, उराँव, आदि की यह सम्पर्क भाषा है, नागपुरी शिष्ट साहित्य के सबसे पहले कवि रघुनाथ नृपति थे। बरजू राम हनुमान सिंह महाकवि कंचन ठाकुर प्रसाद आदि कवियों ने भी नागपुरी भाषा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिये हैं।

आधुनिक रचनाकरों में सबसे पहले जिनका नाम आता है वह है प्रफुल्ल कुमार राय जिन्होंने नागपुरी भाषा के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिये है, इनकी रचना अवसरे नी मिले बुझू आअर किल किला नागपुरी पत्रिका नागपुरी भाषा परिषद् राँची से योगेन्द्र नाथ तिवारी के सम्पादन में छपी। इनके बाद नाम आता है शिव अवतार चौधरी, शारदा प्रसाद शर्मा, कालेश्वर ठाकुर सहनी, उपेन्द्र पाल नहन, बी0पी0 केशरी, क्षितिज कुमार राय, मुकुन्द नायक, डॉ0 गिरिधारी राम गौंझू, धनेन्द्र प्रवाही, डॉ0 उमेश नन्द तिवारी, डॉ0 खालिक अहमद, डॉ. त्रिवेणी नाथ साहू, डॉ0 शकुन्तला मिश्र आदि। इन

नामों के बीच सविता केशरी का भी नाम आता है जिनका एक विशिष्ट पहचान और नाम है, डॉ0 सविता केशरी जो की अभी वर्त्तमान में नागपुरी भाषा की कवि एवं लेखिका है। इन्होंने नागपुरी भाषा के विलुप्त कवियों साहित्यकारों की रचनाओं को पाण्डुलिपि के रूप में आज तक संजोए रखे है तथा अपनी भाषा संस्कृति के संरक्षण के प्रति ये हमेशा सजग रहते है। इनका नागपुरी भाषा के प्रति बहुत गहरा लगाव है, इन्होंने अपने छात्र–छात्राओं के जीवन में आने वाले आर्थिक कठिनाईयों को भी दूर करने की कोशिश जहाँ तक संभव हो करते है तथा ये हमेशा अपने छात्र–छात्राओं का मनोबल बढ़ाने का काम करते है। ये अपनी आने वाली हर मुसिबतों का सामना मुस्कुरा कर किया करते है।

डॉ0 सविता केशरी नागपुरी भाषा के नये साहित्यकारों को नई साहित्यक पहचान दिलाने हेतु सदैव तत्पर रहते है तथा सभी को अपनी भाषा–संस्कृति में रचना लिखने के लिए प्रेरित करते है ताकि अपनी मातृ भाषा का विकास हो सके। इनका प्रेम भाव बहती नदी की धारा की तरह निरछल है।

'kks/k fo"k; dh izj.kk %

झारखण्ड राज्य (छोटानागपुर) मेरी जन्म भूमि एवं कर्मभूमि है और मैं ग्रामीण परिवेश में पली बढ़ी हूँ। इस कारण में अपनी मातृभाषा में ही सभी स्थानों पर बातों एवं विचारों का अदान–प्रदान दूसरों से किया करती हूँ तथा मैं अपनी मातृभाषा में अपनी पढ़ाई इंटरमीडिएट से लेकर एम.ए. की पढ़ाई भी की हूँ। अपनी मातृभाषा के विकास के लिए मैं सदैव अपनी भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए तत्पर रहती हूँ।

जब मैं एम.ए. की पढ़ाई जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग से कर रही थी उस समय कुछ सखी–सहेलियों से पता चला कि हमारे मातृभाषा में यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. की परीक्षा होती है इस परीक्षा में उत्तीर्ण करने वाले छात्र–छात्राओं को प्रोफेसर बनने का सुअवसर प्राप्त होती है इस विषय के बारे में जब मुझे जानकारी मिली तो मैं यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा

की तैयारी करने लगी, इस दौरान मुझे तीन–चार प्रयासों के बाद मुझे सफलता प्राप्त हुई मैं सफलता पाकर बहुत खुशी हुई, क्योंकि मुझे अपनी मातृभाषा की सेवा करने का अवसर मिल चुका था। इस दौरान में पीएच.डी. करने हेतु विषय की चयनित करने हेतु मेरे गुरू डॉ. उमेश नन्द तिवारी ने मुझे डॉ. सविता केशरी जीवन और साहित्य विषय पर शोध करने के लिए प्रेरित किए। जब मैं इस बात की चर्चा नागपुरी भाषा की विदुषी डॉ. सविता केशरी से की तो उन्होंने मुझे अपने विषय पर शोध करने की अनुमति प्रदान की।

इस विषय वस्तु को मैं अपनी शोध निर्देशक डॉ. (प्रो.) त्रिवेणी नाथ साहू से चर्चा की तो उन्होंने भी इस विषय वस्तु पर शोध करने के लिए मुझे निर्देशित किये।

## ifjdYiuk %

परिकल्पना शब्द 'परि'+'कल्पना' दो शब्दों से मिलकर बना हैं परि का अर्थ होता है चारो ओर तथा कल्पना का अर्थ चिन्तन है। इस प्रकार परिकल्पना से तात्पर्य किसी समस्या से संबंधित समस्त संभावित समाधान पर विचार करना है।

अतः जब मैं नागपुरी साहित्य का अध्ययन कर रही थी उस समय इस साहित्य के अन्य विधाओं के साथ जीवन और साहित्य विषय का भी अध्ययन की। अध्ययन के उपरान्त मैंने इस विषय पर गहन विचार की, तो मुझे काफी हद तक नवीनता का अभाव हुआ जो अन्य विधाओं के अपेक्षा इस विधा को अलग करती है, जो हमारे समाज और साहित्य के विकास में उपयोगी हो सकता है। जिस कारण मैं इस विषय पर अपना शोध कार्य करने के लिए आकर्षित हुई और मुझे लगता है कि इसमें काम किया जा सकता है।

## 'kk/k dk egÙo %

सविता केशरी का जीवन और साहित्य से समाज में निम्नलिखित प्रभाव पडेगा–

1) इस शोध के प्रकाश में आने से समस्त नागपुरी भाषा–भाषियों एवं समाज में कवि कलाकारों और साहित्यकारों के प्रति सम्मान बढ़ेगा।

2) नीज भाषा प्रेम एवं अपने संस्कृति के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ेगा।

3) अन्य झारखण्ड भाषाओं में प्रेरणादायक साबित होगा।

4) इस शोध से सविता केशरी को समाज के सामने आने का सुअवसर मिलेगा तथा इनके जीवन और साहित्य से लोग परिचित होंगे।

5) साहित्यक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीति क्षेत्रों के लिए लाभकारी होगा।

## 'kks/k dk mís'; %

1) नागपुरी साहित्यकार सविता केशरी के जीवन और साहित्य से झारखण्डी जन–जीवन एवं सामाजिक सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालना।

2) नागपुरी लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य का गहन अध्ययन करना।

3) नागपुरी साहित्य का महत्त्व एवं उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना तथा साथ ही साथ इसके संकलन संचयन एवं मुल्यांकन की दिशा प्रसस्त करना।

4) नागपुरी साहित्य को समृद्ध करना।

5) नागपुरी साहित्य की मधुरता को दिखलाना या बतलाना।

## 'kks/k i)fof/k %

प्रस्तावित शोध के अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

1) साक्षात्कार विधि

2) अवलोकन विधि

3) प्रश्नावली विधि

4) अनुसूची विधि

5) आलोचनात्मक विधि

6) मूल्यांकन विधि

'kk/k midj.k %

निम्नलिखित सामग्री शोध कार्य के लिए उपयोग किए जा सकते है।

1) शोध से संबंधित अप्रकाशित एवं प्रकाशित रचनाएँ संबंधित पुस्तकों एवं संदर्भ ग्रंथ।
2) टेप रीकॉर्डर
3) पत्र–पत्रिकाएँ, आदिवासी जय झारखण्ड, नागपुरी कला संगम स्मारिका, नाग भूमि, पझरा, अनुसंधान आदि।
4) मोबाईल (व्यक्तिगत सम्पर्क के लिए),
5) इंटरनेट
6) कम्प्यूटर (विस्तृत क्षेत्र में जानकारी के लिए)
7) कैमरा, प्रिंटर, नक्शा पेपर आदि

# ih,p0Mh0 'kks/k izca/k dh izLrkfor :ijs[kk

'kks/k fo"k; %& नागपुरी साहित्यकार सविता केशरी : जीवन और साहित्य : एक अध्ययन

## izLrkouk

(1) शोध विषय की प्रेरणा एवं औचित्य

(2) शोध की विषय सीमा

(3) शोध विधि

(4) विषय से संबंधित पूर्व में किए गये शोध कार्य का विवरण

## igyk v/;k; %& thou o`Ùk ,oa O;fDrRo

(1) जन्म एवं परिवार

(2) वाल्यावस्था

(3) किशोरावस्था

(4) विवाह

(5) शिक्षा

(6) युवावस्था

(7) पारिवारिक स्थिति

(8) सेवा

(9) नागपुरी भाषा की ओर झुकाव एवं प्ररेणा

(10) विविध कार्य

## nwljk v/;k; %& O;fDrxr fo'ks"krk,¡

(1) बाह्य विशेषताएँ

(2) आंतरिक विशेषताएँ

    (क) स्वाभिमानी

    (ख) दृढ़निश्चयी

    (ग) न्यायप्रिय एवं कर्त्तव्य परायण्ता

    (घ) विनम्र

    (ङ) संवेदनशील

    (च) व्यक्तिवादी दृष्टिकोण

    (छ) धार्मिक आचरण

rhljk v/;k; %& ledkyhu ifjfLFkfr;k¡

(1) प्राकृतिक स्थिति

(2) आर्थिक स्थिति,

धार्मिक स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति

(3) राजनीतिक स्थिति

(4) सामाजिक स्थिति

(5) साहित्यक स्थितियाँ

pkFkk v/;k; %& lfork d`'kjh dh lexz jpuk,¡

(1) गद्यकार के रूप में– (कहानी, निबंध, लेख)

(2) पद्यकार के रूप में (कविता)

(3) संपादक के रूप में

ik¡pok v/;k; %& lfork d`'kjh dh jpukxr fo'k"krk,¡

(1) अस्मिता बोध

(2) झारखण्ड दूर्दशा

(3) प्रयोगवादी

NBk v/;k; %&

| | | | |
|---|---|---|---|
| (1) | काव्य भाषा | (2) | बिम्ब विधान |
| (3) | अलंकार | (4) | रस विवेचना |
| (5) | छन्द विधान | (6) | काव्य गुण |

lkroka v/;k; %& ukxiqjh lkfgR; ds fodkl esa lfork d`'kjh dk ;ksxnku ,oa LFkku

milagkj %& मूल्यांकन / निष्कर्ष

ifjf'k"V %& संदर्भ ग्रंथ

संदर्भ सूची

पत्र–पत्रिकाएँ

म्दहसपी ठववो

चित्रावली

ukV %& 'kk/k ik:i e vko';drk gku ij vkf'kd ifjorlu fd;
tk ldr gA

'kk/k funs'kd %

Mk0 ¼iks0½ f=os.kh ukFk lkgw
dqyifr
>kj[k.M jkT; [kqyk fo'ofo|ky;]
jkaph] >kj[k.MA

'kks/kdRrkZ %

lhek dqekjh
,e0,0 ukxiqjh
;w0th0lh0 uV@ts0vkj0,Q0
tutkrh; ,o {ks=h; Hkk"kk ladk;]
jkaph fo'ofo|ky;] jkaph

## vk/kkj xzFkks dh lwph %&

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | गिरिराज डॉ. गिरिधारी राम गोंझू, | पीटर शांति नवरंगी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, | झारखण्ड, झरोखा | 2014 |
| 2 | तिवारी डॉ. उमेश नन्द | आधुनिक नागपुरी साहित्य संदर्भ प्रफुल्ल कुमार राय एक मूल्यांकन | झारखण्ड, झरोखा | 2005 |
| 3 | दुबे डॉ. सुखदेव | धनीराम बक्शी व्यक्तित्व एवं कृतित्व | शोध अप्रकाशित | 1981 |
| 4 | साहु डॉ. सुखदेव | डॉ. भुवनेश्वर अनुज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व | शोध अप्रकाशित | 2003 |
| 5 | डॉ. समरिता कुमारी | डॉ0 गिरिधारी राम गोंझू | कविरत्न : शारदा प्रसाद शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व | 2005 |

lanHkZ xzaFkksa dh lwph %&


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | प्रफुल्ल कुमार राय | सोनझईर | बंगला प्रेस, राँची | 1967 |
| 2 | प्रफुल्ल कुमार राय | रिंगचिंगिया | राँची विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण | 1983 |
| 3 | केशरी डॉ. वी0पी0 | साहित्य के तत्व और आयाम | झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची | 2014 |
| 4 | तिवारी डॉ. उमेश नन्द | आधुनिक नागपुरी साहित्य | झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची | 2014 |
| 5 | तिवारी भोला नाथ | भाषा विज्ञान | किताब महल 22 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद | 2014 |

## i=&if=dk,¡&

| | | |
|---|---|---|
| 1. | आज | हिन्दी दैनिक, सामाचार पत्र, राँची |
| 2. | गोतिया | सम्पादक विरेन्द्र कुमार महतो |
| 3. | घरैया गुइठ | सम्पादक जे. मिंज मावलाई शिलंग–08 |
| 4. | अखरा | प्रकाशक मुद्रक स्वामी एवं सम्पाकद वंदना टेटे, राँची, झारखण्ड |
| 5. | आदिवासी | सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार, राँची |
| 6. | डहर | छोटानागपुर सांस्कृति संघ, धुर्वा, राँची |
| 7. | पझरा | प्रधान सम्पादक, रणविजय नाथ शाहदेव, राँची |
| 8. | प्रभात खबर | हिन्दी दैनिक सामाचार पत्र, राँची |
| 9. | हिन्दुस्तान | हिन्दी दैनिक, सामाचार पत्र, राँची |
| 10. | राँची टाइम्स | हिन्दी साप्ताहिक, सामाचार पत्र, राँची |